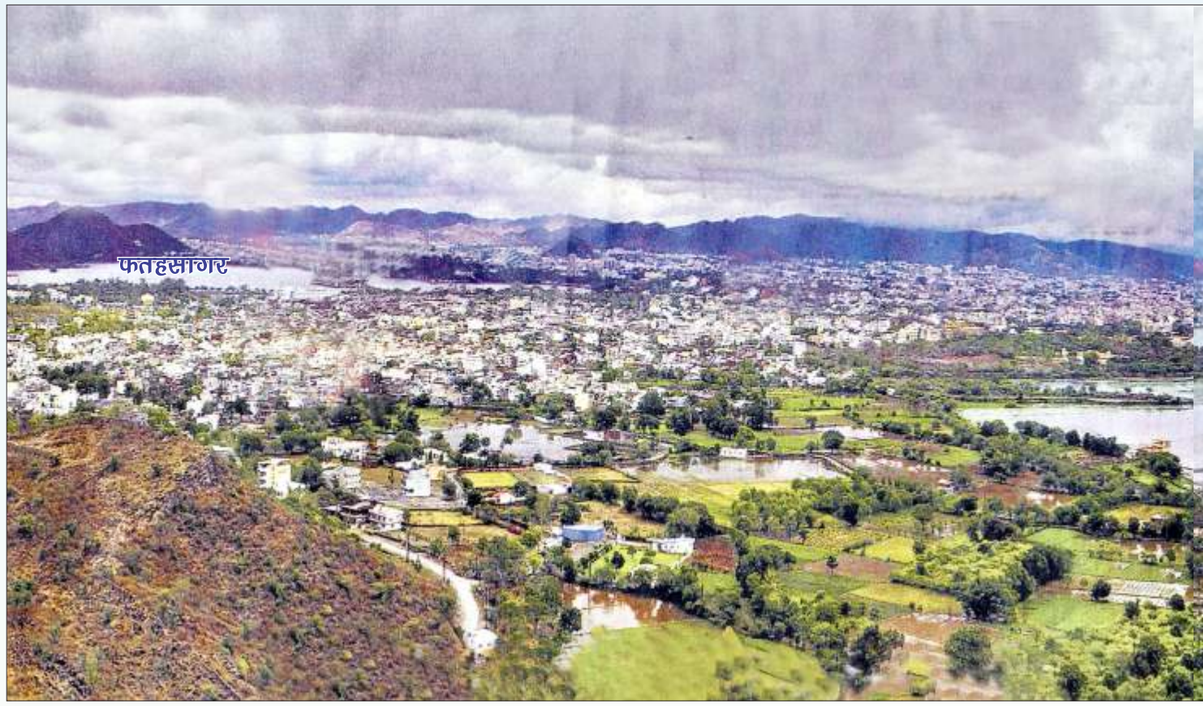

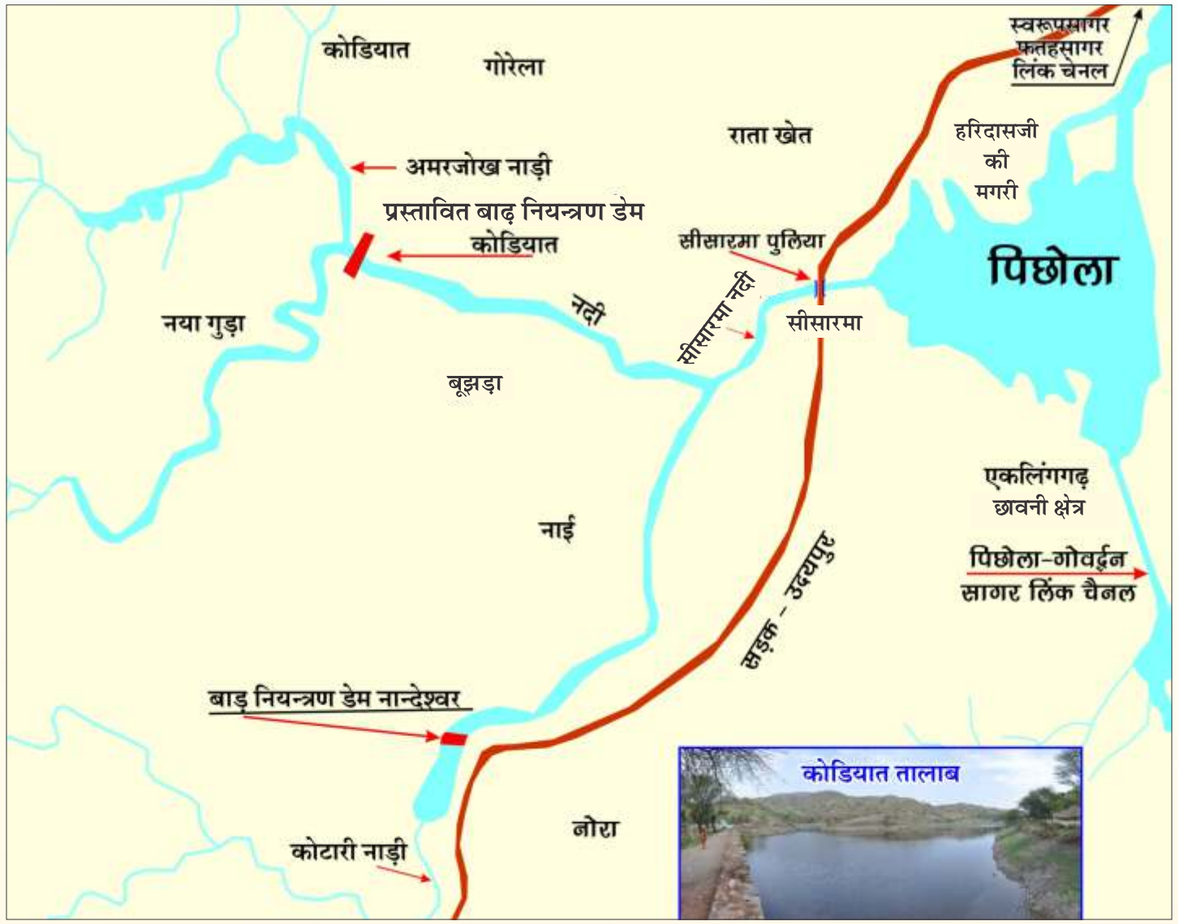

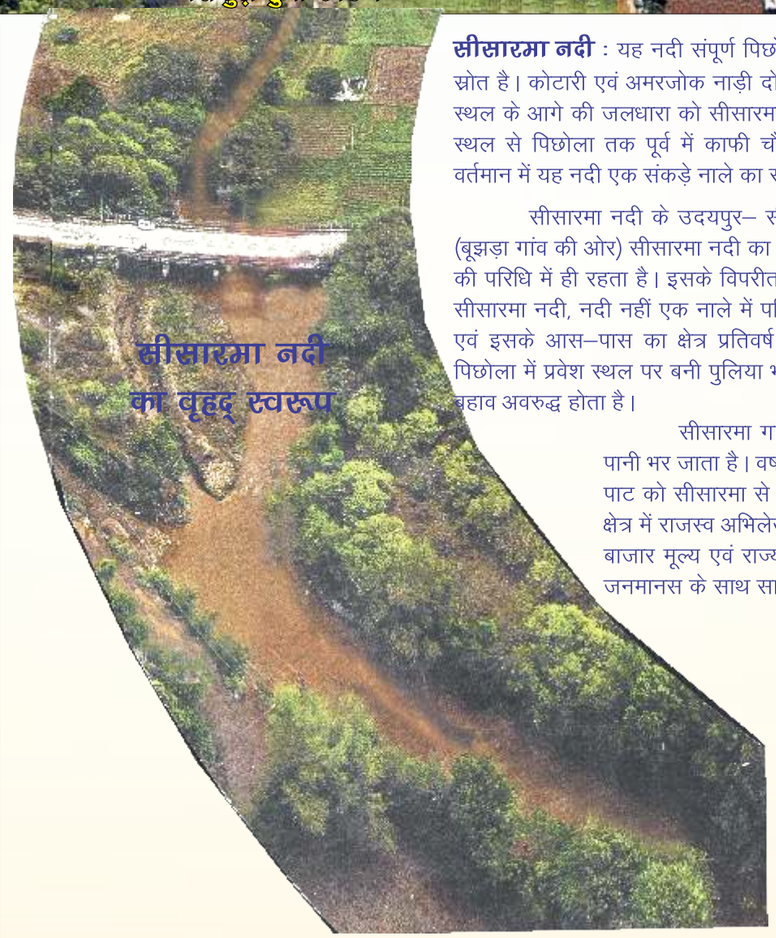

सीसारमा नदी : यह नदी संपूर्ण पिछोला झील तंत्र के साथ फतहसागर का भी मुख्य जल स्रोत है। कोटारी एवं अमरजोक नाड़ी दोनों का संगम सीसारमा गांव के नजदीक होने से इस स्थल के आगे की जलधारा को सीसारमा नदी के नाम से जाना जाता है। यह नदी इस संगम स्थल से पिछोला तक पूर्व में काफी चौड़ी थी। समय के साथ अतिक्रमण होता गया तथा वर्तमान में यह नदी एक संकड़े नाले का रूप ले चुकी है।

सीसारमा नदी के उदयपुर– सीसारमा–नाई मार्ग पर बने हुए पुल के पश्चिमी छोर (बूझड़ा गांव की ओर) सीसारमा नदी का पाट पर्याप्त चौड़ा है तथा प्रायः जल का बहाव भी पाट की परिधि में ही रहता है। इसके विपरीत पुल एवं पिछोला के मध्य यानी पुल के पूर्वी छोर पर सीसारमा नदी, नदी नहीं एक नाले में परिवर्तित हो गई है जिसके कारण प्रायः सीसारमा गाँव एवं इसके आस–पास का क्षेत्र प्रतिवर्ष बाढ़ग्रस्त रहता है। इसी प्रकार सीसारमा नदी के पिछोला में प्रवेश स्थल पर बनी पुलिया भी बहुत ही कम ऊँचाई की है जिसके कारण जल का बहाव अवरुद्ध होता है।

सीसारमा गांव के घरों एवं मन्दिर के दरवाजे तक बाढ़ के समय पानी भर जाता है। वर्षा उपरान्त यदि बाढ़ से बचाना है तो सीसारमा नदी के पाट को सीसारमा से पिछोला तक अतिक्रमण मुक्त करना होगा। यदि इस क्षेत्र में राजस्व अभिलेख के आधार पर अतिक्रमण नहीं है, तो तटीय भूमि को बाजार मूल्य एवं राज्य सरकार के नियमानुसार नगर निगम द्वारा स्थानीय जनमानस के साथ सामंजस्य स्थापित कर अधिग्रहण करने हेतु सकारात्मक पहल करनी चाहिये। यह कार्य राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना के अन्तर्गत भी किया जा सकता है। इस कार्य से वर्षाकाल में सीसारमा गांव के खेतों एवं घरों में पानी भरने की समस्या का समाधान सुगमता के साथ हो सकेगा। साथ ही खेतों की भूमि का कटाव एवं पिछोला झील में अनावश्यक गाद भराव भी अपेक्षाकृत कम होगा।

सीसारमा गांव के पास उदयपुर–नाई मार्ग पर बनी लम्बी ऊंची पुलिया के उपरान्त भी सीसारमा नदी का सीसारमा से पिछोला तक का पाट संकुचित होने से जब नदी उफान पर आती है तो पानी बहाव क्षेत्र से ओवरफ्लो होकर आसपास स्थित मकानों एवं खेतों से बहता हुआ पिछोला झील में समावेश होता है। इससे गांव में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यातायात पर भी प्रभाव पड़ता है। इसका मुख्य कारण है – नदी के आसपास अतिक्रमण के फलस्वरूप मुख्य बहाव क्षेत्र का संकुचित होना। अतः इस नदी के बहाव क्षेत्र को अतिक्रमण मुक्त या भूमि अवाप्त कर पाट को चौड़ा किया जाना आवश्यक है।

सीसारमा नदी से पिछोला मे आते पानी के स्तर को देखा जाये तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रतिवर्ष सीसारमा नदी में मिट्टी खुले पानी के आवक एवं पिछोला के मुहाने पर मिट्टी के जमाव से, झील तल ऊपर उठता है, इससे पानी की आवक में अवरुद्धता आती है तथा सीसारमा गांव एवं आसपास के क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

उबेश्वर क्षेत्र की अथाह हरियाली एवं मनोहारी पहाड़ियाँ – सदैव शहरवासियों को अपनी ओर आकर्षित करती है

उदयपुर अंचल के उबेश्वर महादेव की पहाड़ियों में मेहरबान हुए मेघों से अरावली की पर्वतमालाएँ हरीतिमा से ढक जाती हैं। इस प्राकृतिक सुषमा को निहारने के लिए उदयपुर के नागरिक एवं सैलानी पिकनिक मनाने यहाँ पहुँचते हैं। झीलों की इस नगरी के आसपास ऐसी अनेक पर्वतमालाएँ हैं, जिन्हें वर्षाकाल में निहारने की इच्छा होती है। यदि इस क्षेत्र को विकसित किया जाये तो अनेक सैलानी इस ओर आकर्षित होंगे। यह पिछोला झील तंत्र का मुख्य जलग्रहण क्षेत्र है। इस क्षेत्र में प्राकृतिक नाले, नदियां, पहाड़ एवं पेड़–पौधों को सदैव संरक्षित रखना पिछोला तंत्र को सदैव जीवन्त रखने हेतु अत्यन्त आवश्यक है।